

ब्राह्मण का सपना

एक नगर मे कोई कंजूस ब्राह्मण रहता था। उसने भिक्षा से प्राप्त सत्तुओ मे से थोडे से खाकर शेष से एक घडा भर लिया था। उस घडे को उसने रस्सी से बांधकर खूंटी पर लटका दिया और उसके नीचे पास ही खटिया डालकर उसपर लेटे-लेटे विचित्र सपने लेने लगा, और कल्पना के हवाई घोडे दौडाने लगा।

उसने सोचा कि जब देश मे अकाल पडेगा तो इन सत्तुओं का मूल्य १०० रुपये हो जायगा। उन सौ रुपयो से मैं दो बकरियां लूँगा। छः महीने मे उन दो बकरियो से कई बकरिये बन जायंगी। उन्हे बेचकर एक गाय लूँगा। गौओ के बाद भैंसे लूँगा और फिर घोडे ले लूँगा।

घोडो को महंगे दामो मे बेचकर मेरे पास बहुत सा सोना हो जायगा। सोना बेचकर मैं बहुत बडा घर बनाऊँगा। मेरी सम्पत्ति को देखकर कोई भी ब्राह्मण अपनी सुरुपवती कन्या का विवाह मुझसे कर देगा। वह मेरी पत्नी बनेगी। उससे जो पुत्र होगा उसका नाम मैं सोमशर्मा रखूँगा।

जब वह घुटनो के बल चलना सीख जायेगा तो मैं पुस्तक लेकर घुडशाला के पीछे की दीवार पर बैठा हुआ उसकी बाल-लीलाये देखूँगा। उसके बाद सोमशर्मा मुझे देखकर मां की गोद से उतरेगा और मेरी ओर आयेगा तो मैं उसकी मां को क्रोध से कहूँगा- "अपने बच्चे को संभाल।"

वह गृह-कार्य मे व्यग्र होगी, इसलिये मेरा वचन न सुन सकेगी। तब मैं उठकर उसे पैर की ठोकर से मारूँगा। यह सोचते ही उसका पैर ठोकर मारने के लिये ऊपर उठा। वह ठोकर सत्तु-भरे घडे को लगी। घडा चकनाचूर हो गया। कंजूस ब्राह्मण के स्वप्न भी साथ ही चकनाचूर हो गये ।

कथा सुनकर सुवर्णसिद्धि ने कहा, "ठीक कहते हो, लोभवश लोग इसी प्रकार दुःख पाते

है। जो व्यक्ति परिणाम पर बिना विचार किए जल्दबाजी में कोई काम करता है, उसे राजा चंद्र की तरह ही दुखी होना पड़ता है ।"

चक्रधर ने पूछा, "वह कैसे?"

सुवर्णसिद्धि बताने लगा--

वानरराज का बदला

गुरुद्वय का मपन

एक नगर भेकरै कंएभ गुरुद्वय ररुत घा। उभन त्रिवा मपेपुमडु भमे घेहे मेपाकर मधे म-
एक अरु हर लिया घा। उभ अरु के उभन रेभी मगेणकर पप्री पर लएका रिया उर उभक-
नीण पाम की पएया रालकर उभपर लएले विगिउ मपन लेने लेगा, उर कलजा क रवरै
अहे रै रान लेगा।

उभन मेगो कि एग रमे भयेकाल परगो उ उेन मडुउं का भल ००० रुपय के रियगा। उन भो रुपय-
म भे रै करिया लगेगा। कः भनीन भेउन र करिय भे करै र करिय गेन रयगी। उन रै गकर
एक गाथ लगेगा। गौ उ क गे र रुमै लेगा उर रिर अहे ले लेगा।

अहे के भेरुग रै भ भे गे गकर भरे पाम गुरु म मने र रियगा। मने गे गकर भरे रुरु गरा अर
गना उगी। भरी मभरुिक रै पिकर करै ही गुरुद्वय मपनी मरुपवती कनट का विवाक भुपम केर
रगे। वरु भरी पडा नी गनगी। उभम रै पेरु रगे उभका नाम भमे भेमग्ग रापगे।

एग वरु अएन के गेल गलना भीप रयगो उ भेपिभरु लकेर अरुमाला क पीठ के रीवार पर
गौ रुग्ग उभकी गाल-लीलाथ रैपिगे। उभक गे र भमेमग्ग भुप रैपिकर भां की गदे म उउरगे
उर भरी उर मुयगो उ भे उभकी भां क के रै म के रगी - "मपन गे ररु भे राला।"

वरु गरु-काट भवेगु रगी, उभलिय भे रौ वगन न मज मकगी। उभ भउंकर उभपे रै की उंकेर
म भेरुग। वरु मगेउ की उभका पर उंकेर भागन के लिय उेपर उं। वरु उंकेर मडु र अरु के
लगी। अरु गकना गुर र गेया। कंएभ गुरुद्वय क मधुपुती भाष की गकना गुर र गेया।

कषा मजकर मरु लभिमि न के र, "वीक करुत रु, लेहे वम लगे उभी प्रकार रःप पाउ रै र"
वृत्ति, परि उभ पर गिन विगार किर एल गुराणी भे करै का भ करुत रु, उभ गे र गे की उरु
की रपी रने परुत रौ।

गकुर न पेका, "वरु कमे?"

मरु लभिमि उर न लेगा—

मनरुा र - विरु केल रला